शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1 Vol -8 June 2024

छायावादी काव्य में नारी का उद्दात स्वरूप

[1]वंदना शुक्ला
शोध छात्रा (हिंदी विभाग)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर

[2]डॉ. आशीष कुमार तिवारी
शोध निर्देशक (सह आचार्य - हिंदी विभाग)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर

शोधसार

मनुष्य को अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व की अपेक्षा सदैव रही है क्योंकि व्यक्तित्व के विकास से ही व्यक्ति की अपनी और सामाजिक उपादेयता संभव है। हृदय और मस्तिष्क के सम्पूर्ण विकास पर उसके सामाजिक रागात्मक सम्बन्ध स्थापित हो सकते है,चाहे वह नारी हो चाहे पुरुष। यद्यपि पुरूष और नारी के हृदयगत और मानसिक विकास भिन्न है। इसी कारण ये दोनों एक दूसरे है।

बीज शब्द

मानसिकता, प्रेरणा, दुर्बलता, संघर्ष, शोषण।

भूमिका

नारी आदिम संस्कृति का उद्गम स्थल है, नारी पुरुष की प्रेरणा है और पुरुष संघर्ष का प्रतीक है। दोनों की भिन्न प्रकृति से ही परस्पर पूरकता और जीवन की पूर्णता संभव है।याज्ञवल्क्य ने कहा है - ''जिस तरह चने अथवा सीप का आधा दल दूसरे से मिलकर पूर्ण होता है उसी प्रकार पुरुष के सामने का खाली आकाश नारी के साथ मिलने से पूर्ण होता है।''[1] अर्थात् पुरुष और नारी दो विरोधी नहीं, वरन् एक-दूसरे के पूरक तत्व हैं। वैदिक और उत्तर-वैदिक काल के पश्चात् हमारे समाज की मौलिक व्यवस्थाएं रूढ़ियों के रूप में परिवर्तित होने लगीं थी जिसके फलस्वरूप स्त्रियों में लज्जा और ममता के गुणों को उनकी दुर्बलता समझकर पुरुष ने उनका मनमाना शोषण करना आरम्भ कर दिया। पुरुषों ने शक्ति के लोभ में महिलाओं के पारिवारिक अधिकार तक छीन लिये। इन परिस्थितियों का परिणाम यह हुआ कि मध्य काल के हिन्दू

समाज में महिलाओं की स्थिति एक दासी से अधिक नहीं रह गयी। सती प्रथा के प्रचलन, विधवा पुनर्विवाह पर प्रतिबन्ध, पर्दा प्रथा का प्रचलन एवं बहुपत्नी विवाह जैसी थोपी गयी सामाजिक व्यवस्था के कारण भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति बहुत नाजुक हो गयी। मध्ययुगीन "सामन्ती वातावरण में नारी भोग्य सम्पदा के रूप में ग्रहण की जाने लगी थी। नारी प्राप्ति हेतु युद्ध भी होने लगे थे। स्त्री किसी न किसी पुरुष के अभिभावकत्व में रहने लगी और उसके अधिकार कम होने लगे थे।"[2] प्राकृतिक गुणों से सम्पन्न, करुणा, ममता और त्याग की प्रतिमूर्ति नारी को समाज में कभी भी वह स्थान नहीं मिला जिसकी वह अधिकारिणी थी।

छायावादी साहित्यकारों ने नारी को एक सर्वथा नवीन दृष्टि से देखा। वह पूर्व की दृष्टियों से भिन्न होने के साथ-साथ नारी जाति को एक नवीन गरिमा और उसके अस्तित्व को एक नयी अर्थवत्ता प्रदान करने वाली थी। इन कवियों ने नारी को समस्त बन्धनों से मुक्त करने तथा उसे समाज में सम्मानजनक स्थान देने का प्रस्ताव रखा। छायावादी काव्य में नारी निर्जीव सम्पत्ति मात्र नहीं रही, बल्कि इसमें उसकी इच्छा-आकांक्षाओं, सुख-दुखों की अभिव्यक्ति भी हुई। प्राचीन जर्जर मान्यताओं को समाप्त कर नवीन समतावादी धरातल पर उसकी प्रतिष्ठा की गयी उसके अधिकारों की ही चर्चा नहीं हुई, अपितु उसकी प्रणय लीला तक का खुलकर वर्णन हुआ।

छायावादी कालखण्ड राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा काव्यरूप की दृष्टि से जागृति का काल था। फिर भी काल्पनिकता, प्रकृति प्रेम के अतिरिक्त स्त्री विमर्श की दृष्टि से आदरणीय भाव प्रकट किया गया है और उसमें गुणों एवं मूल्यों का आधार माना गया है और वह इन समस्त गुणों के द्वारा पुरूष की उन्नति में सहायता प्रदान करती है –

"दया माया ममता लो आज
मधुरिमा लो अगाध विश्वास ।
हमारा हृदय-रत्न निधि स्वच्छ
खुला है सदैव तुम्हारे पास ।।"[3]

वास्तव में हिन्दी साहित्य में छायावाद से पूर्व किसी भी युग में नारी को वो गौरव नहीं मिला, जो छायावाद में आकर नारी को दिया गया। इस युग में आकर नारी को दया के स्थान पर अपने अधिकार की माँग को उठाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अधिकार की भावना ने स्त्री-पुरुष में समानता और स्पर्धा का भाव जगाया तथा स्त्री की शक्ति को जानने-

समझने में सहयोग किया। डॉ. नामवर सिंह के अनुसार, ''नारी के प्रति पहले जो दया का भाव था, वह बदल गया। इस युग में नारी ने पुरुष से दया के स्थान पर अपने अधिकारों की माँग की। इस अधिकार भावना ने नारी-पुरुष के बीच कहीं समानता का भाव पैदा किया, कहीं स्पर्धा का भाव और कहीं उसकी शक्ति स्वीकार का भाव। कुल मिलाकर भिखारिणी अब मानसिक रूप से स्वामिनी बनी।''[4]

छायावाद से पूर्व नारी पराजित एवं शोषित रूप में ही चित्रित की गई, उनकी मुक्ति की कामना एवं पीड़ा का यथार्थ चित्रण छायावाद में ही पाया जाता है। सुमित्रानन्दन पंत ने नारी के प्रति समाज में हो रहे शोषण का विरोध किया और उसे मुक्त करने की आवाज उठायी।वे नारी की वास्तविक सामाजिक स्थिति के प्रति चिन्तित है। वे चिंतित है पुरुषों द्वारा नारी के किए जाने वाले दुरुपयोग एवं शोषण के प्रति इसका भाव वह अपनी 'नारी'नामक कविता में निम्न प्रकार व्यक्त करते है –

"हाय,मानवी रही न नारी लज्जा से अवगुंठित,
वह नर की लालसा प्रतिमा,शोभा,सज्जा से निर्मित ।
युग-युग की वंदिनी,देह की कमरा में निज सीमित,
वह अवश्य,अस्पृश्य विश्व को,गृह-पशु सी ही जीवित ।।"[5]

उनके काव्य में नारी में विश्वकल्याण की भावना पुरुषों से अधिक है। नारी का त्यागमय जीवन पुरुष की अपेक्षा अधिक प्रशंसनीय है। पंत समस्त जड़ परम्पराओं से नारी को मुक्त करना चाहते थे। उन्होंने मुक्त स्वर में कहा है –

''मुक्त करो नारी को, मानव चिर बन्दिनी नारी को,
युग युग की बर्बर कारा से जननी, सखी, प्यारी को।''[6]

इन्हीं भावनाओं का पोषण करते हुए युग-युग से उपेक्षित नारी को छायावादी कवियों ने अपनी कल्पना के माध्यम से ऊँचे स्थान पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है। पंत के मतानुसार नारी को पुरुष के समान अधिकार प्राप्त नहीं होंगे तो मानव-जीवन के विकास का रथ आगे नहीं बढ़ेगा -

"नर-नारी दो भवनों में, हो बंटे क्षुद्र जिस जग में,
प्राणों के स्वप्न पथिक को, रुकना पड़ता पग-पग में।"[7]

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' नारी को शक्ति के रूप में देखते हैं। उनका मानना है कि नारी में ही वह क्षमता है जिसकी भैरवी नृत्य से समस्त जड़ पुरातन परम्परा समाप्त हो जायेगी व मुक्ति के द्वार खुलेंगे –

''तोड़ो, तोड़ो, तोड़ो कारा
पत्थर से निकले फिर, गंगा-जल की पार्वती।
पुनः सत्य-सुन्दर शिव को संवारती
उर-उर की बनी आरती।।''[8]

निराला ने नारी में जहाँ पुरुष के मन को बरबस अपने आकर्षण में बाँध लेने की क्षमता देखी है वहाँ उसे लज्जा,शील,सामाजिक विभीषिकाओं की कारा में स्वयं बंद पाया है। वह स्वाभिमान से भरी प्रेयसी भी है और पथ प्रदर्शिका भी। छायावादी नारी मुक्ति का स्वरूप परम्परा की अपेक्षा स्वस्थ-सात्विक मनोवृत्ति का परिचायक है। आज के संघर्षशील यथार्थवादी युग में जीने वाली शिक्षित नारी को कवि भावना के प्रवाह में बहने वाली नहीं मानता। वह स्वाभिमान और समता की चाह में उद्वेलित नारी का मानसिक विश्लेषण भी करता है।

छायावादी कवियों ने नारी की दीनता, शोषण, कठोर श्रम का मानवीय धरातल पर वर्णन कर नारी मुक्ति की आकांक्षा व्यक्त की है। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने नारी के पारस्परिक सौन्दर्यपरक कोमल अर्थ देने के साथ-साथ उन अर्थो की भी अभिव्यक्ति की है जिसे नारी ने अपने स्वाभिमान एवं परिश्रम से अर्जित किया है। उन्होनें इलाहाबाद के सड़कों पर पत्थर तोड़ती अभागी युवती को बिम्ब के माध्यम से मजदूर स्त्री के कठोर एवं थका देने वाले श्रम की कारुणिक अभिव्यक्ति देकर उसके श्रम के महत्व को प्रतिष्ठित करना चाहते हैं -

''वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ, करती बार-बार प्रहार।
सामने तरु मालिका अट्टालिका प्रकार ।।"[9]

वहीं सुमित्रानन्दन पंत ने नारी-श्रम की महत्ता को निम्नवत् प्रतिष्ठा प्रदान की है –

''निज द्वन्द्व प्रतिष्ठा भूल, जनों के बैठ साथ,
जो बँटा रही तुम काम-काज में मधुर हाथ,
तुमने निज तन की तुच्छ कंचुकी को उतार,
जग के हित खोल दिए नारी के हृदय-द्वार।''[10]

ग्रामीण नारी के साथ होने वाले इन शोषणों के विरुद्ध सशक्त स्वर छायावादी युग की कविता में सुनाई देते है। ग्राम्य युवती की दयनीय दशा का यथार्थ अंकन सुमित्रानन्दन पंत ने इस प्रकार किया है -

''दुखों में पीस दुर्दिन में घीस
जर्जर हो जाता उसका तन।
ढह जाता असमय यौवन धन।
बह जाता वह तट का तिनका
जो लहरों में हंस खेला कुछ क्षण।''[11]

छायावादी काव्य में भारतीय विधवा नारी की दुर्दशा का भावपूर्ण चित्रण करते हुए उनके प्रति होने वाले अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई गयी है। 'दीपशिखा' की इन पंक्तियों में विधवा नारी का करुण एवं हृदय विदारक चित्र द्रष्टव्य है –

''वह इष्ट देव के मंदिर की पूजा सी
वह दीप-शिखा-सी शान्त भाव में लीन,
वह क्रूर काल ताण्डव की स्मृति रेखा सी,
वह टूटे तरु की टूटी-लता-सी दीन
दलित भारत की ही विधवा है।
वह दुनिया की नजरों से दूर बचाकर,
रोती है अस्फुट स्वर में,
दुःख सुनता है आकाश धीर, निश्चय समीर।''[12]

महादेवी वर्मा ने नारी के हृदय में बसी हुई पीड़ा एवं उसकी करुणापूर्ण परतंत्रता का चित्रण कर मुक्ति की आकांक्षा व्यक्त की है –

''विस्तृत नभ का कोई कोना, मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही उमड़ी कल थी मिट आज चली।"[13]

छायावादी कवि नारी की सार्थकता जीवन के सुन्दर समतल में प्रवाहित होना बताते हैं। साथ ही उसे यह प्रेरणा देते हैं कि अपनी स्मित रेखा से संधि पत्र लिखे। यह आदर्श संस्कृति के रंग में रंगी हुई प्रत्येक भारतीय नारी के जीवन के लिये उपादेय है और यही नारी मुक्ति का एक रूप और नारी मुक्ति की कामना भी है –

''आँसू से भीगे अंचल पर, मन का सब कुछ रखना होगा,
तुमको अपनी स्मित रेखा से, यह संधिपत्र लिखना होगा।''[14]

जयशंकर प्रसाद नारी की छवि को संसार के सौंदर्य और सुख का मूल कारण मानते हैं। कवि स्थूल सौंदर्य के स्थान पर भाव-सौंदर्य की ओर अधिक झुक जाता है –

"मैं भी भूल गया हूँ कुछ हाँ स्मरण नहीं होता, क्या था!
प्रेम, वेदना, भ्रांति या कि क्या? मन जिसमें सुख सोता था!
मिले कहीं वह पड़ा अचानक, उसको भी न लुटा देना;
देख तुझे भी दूँगा तेरा भाग, न उसे भुला देना!"[15]

वास्तव में छायावादी कवि की नारी कल्पना ही नैसर्गिक है। ''कवि की प्रेयसी स्थूल पार्थिव रूप की राशि नहीं है वरन् प्रकृति के संचित कोष से निर्मित नैसर्गिक सौंदर्य की प्रतिमा है।''16 कवि प्रकृति की इस सुषमा में खो जाता है और तन्मय होकर समूचे प्रकृति का मानवीकरण करने लग जाता है। यह मानवीकरण छायावादी कवियों की सामान्य विशेषता है। प्रसाद के काव्य में प्रकृति का यह मानवीकरण बहुत ही उदात्त रूपों में व्यंजित हुआ है। ये तो प्रकृति से इतने अधिक तादात्म्य का अनुभव करने लगते हैं कि उसे पुकार-पुकार कर चेतावनी देने में भी नहीं चूकते -

''फटा हुआ था नील वसन क्या
ओ यौवन की मतवाली।
देख अकिंचन जगत लूटता
तेरी छवि भोली-भाली!''[17]

प्रसाद ने 'कामायनी' में श्रद्धा के रूप में नारी का एक बहुत ही सौम्य, सरल और अकृत्रिम सौंदर्य चित्रित किया है, जिसमें कहीं कोई बनावट न होकर भी सब कुछ स्पष्ट और गंभीर है-

''यों सोच रही मन में अपने, हाथों में तकली रही घूम;
श्रद्धा कुछ-कुछ अनमनी चली, अलके लेती थीं गुल्फ चूम।"[18]

छायावादी कवियों ने नारी को पुरुष की प्रेरक शक्ति के रूप में स्वीकार किया। उनकी नारी दया, क्षमा, करुणा, प्रेम जैसे गुणों से सम्पन्न है और श्रद्धा की पात्र भी। 'कामायनी' की ये पंक्तियाँ सम्पूर्ण नारी जाति के लिए चरितार्थ हैं –

"नारी! तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में,
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।"[19]

छायावादी अपनी भावना की मुक्ति और आकांक्षा की पूर्ति की कामना तो रखते थे, किन्तु समाज में उन्हें वह स्वतंत्रता उपलब्ध नहीं हो पा रही थी। कामना और निषेध की टकराहट से जो बोध पैदा हुआ, उसकी मार्मिक अभिव्यक्ति प्रसाद के 'आँसू' काव्य-संग्रह की इन पंक्तियों में दृष्टिगोचर होती है –

''चातक की चकित पुकार, श्यामा ध्वनि सरल रसीली
मेरी करुणार्द्र कथा की, टुकड़ी आँसू से गीली।''[20]

मन, भावना और विचार के स्तर पर ही सही, छायावादी एक नयी समाज व्यवस्था का निर्माण करना चाहते थे। यह काम पूर्व की स्थापित सामाजिक व्यवस्था का विध्वंस किए बिना सम्भव नहीं था। प्राचीन रूढ़ियों का विध्वंस और नयी समाज-व्यवस्था का निर्माण इन दोनों ही बातों को हम छायावाद में पाते हैं। तभी तो पंत कहते हैं 'दुरत झरो जगत् के जीर्ण पत्र'। स्पष्ट है कि जीर्ण पत्रों के झरने की आकांक्षा रखने छायावादी नयेपन का आह्वान करते हैं। अनेक विद्वानों ने छायावाद में स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह और पलायनवाद एवं निराशावाद का प्राधान्य माना है, परन्तु डॉ. रामविलास शर्मा ने इस धारणा का खण्डन करते हुए कहा है- ''क्या जीवन से परागमुख कोई भी व्यक्ति ऐसी सुंदर पंक्तियाँ लिख सकता है?

क्या स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह कहने से उस ठोस जीवन-आकांक्षा की व्याख्या की जा सकती है। निराला सब कुछ नया चाहते हैं। पुराना कुछ भी उन्हें स्वीकार्य नहीं।"[21]

इस नयी रोशनी में छायावादियों ने नारी को देखा, तो वह एक अपूर्व अश्रुपूरित और अर्थवत्ता से युक्त दिखी। यही नयापन चारों प्रमुख छायावादियों में अलग-अलग रूपों में दृष्टिगोचर होता है।'कामायनी' में जयशंकर प्रसाद की नारी भावना की प्रवक्ता बनी श्रद्धा कहती है - छायावाद में नारी सौन्दर्य का पुंज है और प्रेरणा का स्रोत भी। जयशंकर प्रसाद कृत 'कामायनी' की 'श्रद्धा' तथा सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' कृत 'तुलसीदास' की 'रत्नावली' ऐसी ही नारियाँ हैं जो पुरुष की प्रेरक शक्ति को उजागर करती हैं। ''पंत के उच्छ्वास में किसी परिणत विरही का ताप नहीं, बल्कि अनुभवहीन युवक की प्रथम विरह-व्यथा का उद्गार है। यह उच्छ्वास बाल-बादल की तरह अभी-अभी उठा है, साथ ही वह 'सरल' और 'अस्फुट' भी है। अभी उसे अपने व्यथा का पूरा-पूरा बोध भी नहीं है। इसीलिए उसमें युवा-सुलभ प्रगल्भता नहीं है, बल्कि उसके स्थान पर किशोर संकोच है। यही वजह है कि यह प्रणय अस्फुट रूप में अभिव्यक्त हुआ है।'' कवि 'निराला' कुरूपता में भी सौन्दर्य देख लेते हैं और पत्थर तोड़ती मजदूरनी का सौन्दर्य वर्णन "श्याम तन, भर बँधा यौवन, नत नयन, प्रिय-कर्म-रत-मन। कह कर करते हैं। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के नारी मुक्ति की कामना पर प्रकाश डालते हुए डॉ. वल्लभ दास तिवारी लिखते हैं- ''निराला ने नारी में जहाँ पुरुष के मन को बरबस अपने आकर्षण में बाँध लेने की क्षमता देखी है वहाँं उसे लज्जा, शील, सामाजिक विभीषिकाओं की कारा में स्वयं बंद पाया है। वह स्वाभिमान से भरी प्रेयसी भी है और पथ प्रदर्शिका भी।''[22]

नारी-स्वतंत्रता का सबसे मौलिक और निर्णायक प्रदर्शन प्रेम और विवाह में उसकी अपनी इच्छा के चुनाव में प्राप्त होता है। अगर वह इस मामले में स्वतंत्र नहीं है तो वास्तव में वह स्वतंत्र नहीं है। नारी के प्रति छायावादी कवि के दृष्टिकोण का यह सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है। छायावाद युग के कवियों ने अनुभव किया कि मूल प्रश्न नारी-स्वाधीनता का है। प्रश्न विवाह का नहीं, प्रेम का है, बंधन का नहीं, मुक्ति का है। यदि विवाह में बंधन है तो चाहे वह विधवा-विवाह हो अथवा कुमारी का दोनों का आग्रह व्यर्थ है। आधुनिक युग के प्रारम्भिक चरणों में जाति-भेद, धर्म-भेद, सम्प्रदाय-भेद अधिक था। इसलिए व्यक्ति की स्वतंत्रता का मूल्य बहुत कम था। समाज के जीवन में एक ठहराव आ गया था। यही ठहराव सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में सड़न पैदा कर रहा था। छायावादी भावधारा तथा विचारधारा ने इस सांस्कृतिक स्थिति को पहचाना था। उसने समाज में वंदनीय नारी को दयनीय रूप में देखा। नारी के उत्पीड़न को भी देखा। छायावादी कवियों ने नारी के महत्व को स्वीकार किया तथा

जो सदियों से तिरस्कृत थी, जिन्हें केवल भोग्या मात्र समझा जाता था, उन्हें इष्टदेव के मंदिर की पूजा सी पवित्र कहा तथा अपमान के पंक और वासना के पर्यंक से ऊपर उठाया।

छायावादी कवियों ने काव्यगत रूढ़ियाँ तोड़ीं, पुरानी मान्यताओं को ध्वस्त किया और नया का सृजन किया। नैतिक मर्यादाओं और बन्धनों को तोड़ा चाहे वे सामाजिक हों या राजनैतिक या धार्मिक। पाखंड, बाह्याडम्बर के प्रति विद्रोह का स्वर फूटा और मर्यादावाद के बन्धन तोड़ दिये गये। इसके कारण काव्य अपने वास्तविक स्वरूप को प्राप्त कर सका। हिंदी साहित्य के छायावादी युग की प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित कवियत्री महादेवी वर्मा की गद्य एवं पद्य की रचनाओं से उनके व्यक्तित्व के दो पहलू देखने को मिलते हैं। उनकी कविता में रहस्यवादी प्रवृत्ति और दुखवाद की अधिकता है, भावुकता है। लेकिन गद्य में विचारक के रूप में उनका बौद्धिक पक्ष प्रखर है। 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएं', 'श्रृंखला की कड़ियाँ' जैसी रचनाओं के ज़रिए महादेवीजी ने भारतीय स्त्री-जीवन के अनदेखे पहलुओं पर प्रकाश डाला है। इसी कारण, स्त्री विमर्श के संदर्भ में उनकी गद्य रचनाओं का मूल्यांकन आवश्यक हो जाता है। महादेवी नारी-चेतना की भारतीय परंपरा पर विचार करनेवाली अद्वितीय विचारक रही हैं। उनके विचार रेखाचित्रों से होकर श्रृंखला की कड़ियाँ बनकर हमारे सामने उभर आते हैं| 'श्रृंखला की कड़ियाँ' भारतीय नारी की समस्याओं का जीवंत विवेचन ही है।

महादेवी एक प्रभावशाली सक्रिय महिला कार्यकर्ती थीं पर विरोधी नारी अधिकारवादी नहीं थी। उन्होंने अपनी रचना 'श्रृंखला की कड़ियों' में भारतीय नारी की दयनीय दशा, उनके कारणों और उनके सहज नूतन सम्पन्न उपायों के लिए अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए हैं| इतना ही नहीं, उन्होंने उन विचारों पर स्वयं जी कर भी दिखाया है। महादेवी वर्मा को 'आधुनिक मीरा' भी कहा जाता है। उन्होंने अपनी कृति 'दीपशिखा' के लिए बहुत से वर्णन चित्रित किए हैं निम्न पंक्ति द्रष्टव्य है।

"भारतीय शास्त्रों में महिलाएं पुरुष की संगिनी रही है, छाया मात्र नहीं ।"[23]

उन्होंने नारी जगत को भारतीय संदर्भ में मुक्ति का संदेश दिया। नारी मुक्ति के विषय में उनका विचार है कि भारत की स्त्री तो भारत माँ की प्रतीक है। वह अपनी समस्त सन्तान को सुखी देखना चाहती है| उन्हें मुक्त करने में ही उनकी मुक्ति है।मैत्रेयी, गोपा, सीता और महाभारत के अनेक स्त्री पात्रों का उदाहरण देकर वह निष्कर्ष निकालती हैं कि उनमें से प्रत्येक पात्र पुरुष की संगिनी रही है, छाया मात्र नहीं।छाया और संगिनी का अंतर स्पष्ट है – 'छाया का कार्य, आधार में अपने आपको इस प्रकार मिला देना है जिसमें वह उसी के समान जान पड़े और संगिनी का अपने सहयोगी की प्रत्येक त्रुटि को पूर्ण कर उसके जीवन को अधिक से अधिक पूर्ण बनाना।

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1 Vol -8 June 2024

'नारीत्व एक अभिशाप है'

'हमारी श्रृंखला की कड़ियाँ'

लेख उन्होंने साल 1931 में लिखा था। स्त्री और पुरुष के पति-पत्नी संबंध पर विचार करते हुए महादेवीजी ललकार भरे स्वर में सवाल उठाती हैं – अपने जीवनसाथी के हृदय के रहस्यमय कोने-कोने से परिचित सौभाग्यवती सहधर्मिणी कितनी हैं? जीवन की प्रत्येक दिशा में साथ देनेवाली कितनी हैं? रामायण की सीता पतिव्रता रहने के बावजूद पति की परित्यक्ता बन गयी। नारी की नियति ऐसी क्यों? महादेवीजी इसे नारीत्व का अभिशाप मानती है। 1933 ई. में उन्होंने नारीत्व के अभिशाप पर लिखा है – "अग्नि में बैठकर अपने आपको पतिप्राणा प्रमाणित करने वाली स्फटिक सी स्वच्छ सीता में नारी की अनंत युगों की वेतना साकार हो गयी है। "सीता को पृथ्वी में समाहित करते हुए राम का हृदय विदीर्ण नहीं हुआ।"[24]

'भारतीय संस्कृति और नारी' शीर्षक निबंध में उन्होंने प्राचीन भारतीय संस्कृति में स्त्री के महत्वपूर्ण स्थान पर गंभीर विवेचना की है। उनके अनुसार मातृशक्ति की रहस्यमयता के कारण ही प्राचीन संस्कृति में स्त्री का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, भारतीय संस्कृति में नारी की आत्मरूप को ही नहीं उसके दिवात्म रूप को प्रतिष्ठा दी है। महादेवी आधुनिक नारी की स्थिति पर नज़र डालते हुए भारतीय नारी के लिए समाज में पुरुष के समकक्ष स्थान पाने की ज़रूरत पर जोर देती हैं। 1934 ई. में लिखित 'आधुनिक नारी-उसकी स्थिति पर एक दृष्टि' लेख में वे कहती हैं –"एक ओर परंपरागत संस्कार ने उसके हृदय में यह भाव भर दिया है कि पुरुष विचार, बुद्धि और शक्ति में उससे श्रेष्ठ है और दूसरी ओर उसके भीतर की नारी प्रवृत्ति भी उसे स्थिर नहीं करने देती।"[25]

महादेवी अपनी लेखनी से सजगता और निडरता के साथ भारत की नारी के पक्ष में लड़ती रहीं। नारी शिक्षा की ज़रूरत पर जोर से आवाज़ बुलंद की और खुद इस क्षेत्र में कार्यरत रहीं।उन्होंने गांधीजी की प्रेरणा से संस्थापित प्रयाग महिला विद्यापीठ में रहते हुए अशिक्षित जनसमूह में शिक्षा की ज्योति फैलायी थी। शिक्षा प्रचार के संदर्भ में वे सुधारकों की अदूरदर्शिता और संकुचित दृष्टि पर खुलकर वार करती हैं। वह लिखती हैं – "वर्तमान युग के पुरुष ने स्त्री के वास्तविक रूप को न कभी देखा था, न वह उसकी कल्पना कर सका।उसके विचार में स्त्री के परिचय का आदि अंत इससे अधिक और क्या हो सकता था कि वह किसी की पत्नी है।कहना न होगा कि इस धारणा ने ही असंतोष को जन्म देकर पाला और पालती जा रही है|"[26]

नारी में यौन तत्व को ही प्रधानता देनेवाली प्रवृतियों का उन्होंने विरोध किया| उनके अनुसार निर्जीव शरीर विज्ञान ही नारी के जीवन की सृजनतात्मक शक्तियों का परिचय नहीं दे

सकता। उनका मानना है कि 'अनियंत्रित वासना का प्रदर्शन स्त्री के प्रति क्रूर व्यंग ही नहीं जीवन के प्रति विश्वासघात भी है।

संदर्भ सूची

1. आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी / संपादक- जे.एम.देसाई / पृष्ठ9
2. वही.../ पृष्ठ 18
3. कामायनी / जयशंकर प्रसाद
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास / डॉ.नगेन्द्र / पृष्ठ342
5. नारी / सुमित्रानंदन पंत
6. वही...
7. वही...
8. विधवा / सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
9. वह तोड़ती पत्थर / सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
10. सुमित्रानंदन पंत
11. सुमित्रानंदन पंत
12. दीपशिखा / महादेवी वर्मा
13. मैं नीर भरी दुःख की बदली / महादेवी वर्मा
14. आँसू / जयशंकर प्रसाद
15. कामायनी / जयशंकर प्रसाद
16. आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी / सम्पादक-जे.एम.देसाई / पृष्ठ 12
17. कामायनी / जयशंकर प्रसाद
18. वही...
19. वही...
20. आंसू / जयशंकर प्रसाद
21. भारतीय नारी:दिशा और दशा / आशारानी व्होरा/पृष्ठ 132
22. वही.../ पृष्ठ 135
23. दीपशिखा कविता / महादेवी वर्मा / पृष्ठ 112
24. श्रृंखला की कड़ियाँ / महादेवी वर्मा / पृष्ठ 13
25. वही../ पृष्ठ14
26. वही../ पृष्ठ18